

14²/₂₀

कावली पेशा है। वादी व कुत्ते आदि
उपलब्ध नहीं। वास्तु-शिल्प का यह
कोई उपलब्ध नहीं। वादी व कुत्ते आदि
की अनुपलब्धि में वास्तु-शिल्प का
प्रकार में स्थापित किया जाता है। कावली पेशा
कुत्तों को पालना व उनसे प्रेम करना
अपना जीवन गन्तव्य है।